राहुल सांकृत्यायन का कथा–साहित्य : एक संदृष्टि

डॉ. आर.पी. वर्मा
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र

राहुल सांकृत्यायन सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न और प्रतिशील विचारक थे। अपने विराट् व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण वे हिन्दी साहित्य में अप्रतिम स्थान के अधिकारी हैं। उनका जीवन क्रान्तिमय था। निरन्तर सत्यान्वेषण, गतिशीलता, अनुसन्धानाप्रियता एवं रूढ़िवादिता पर प्रहार उनके जीवन की विशेषताएँ हैं। राहुल जी ने साहित्य के विभिन्न अंगों एवं उपांगों का संस्पर्श किया था और विशाल साहित्य–सर्जन अपने महापाण्डित्य का परिचय दिया था। उनका लेखन–पथ अत्यन्त बीहड़ एवं कठिन था। भारत के अलावा विदेशी विद्वान् भी राहुल जी के पाण्डित्य की प्रशंसा करते थे। बुद्धि–वैभव के बल पर उन्होंने हिन्दी–जगत् में धूम मचा दी थी। यह धूम आडम्बर मात्र न था। उसमें सच्चाई थी। उसी सच्चाई के कारण ही उन्हें महापण्डित की उपाधि से अलंकृत किया गया था। पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी ने राहुल जी के विषय में लिखा है – 'वे विनय, तप, गाम्भीर्य की मूर्ति थे। स्वाध्याय में लीन दान्त–शान्त ऋषिकुमार थे और ग्रंथ प्रणयन में लघुव्यास थे। उनका प्रोज्जवल और प्रदीप्त मुखमण्डल ही कहता था कि सभ्य, शिष्ठ और अधिकारी विद्वान थे। उनकी आराध्या शारदा थी, उसी की सेवा में निरन्तर रमण करते थे। वे देश की, विशेषतः हिन्दी की विभूति थे। वे उच्चकोटि के मनुष्य थे चमत्कारी पुरुष, ज्योतिपुंज। वस्तुतः राहुल जी विद्या–विनय–सम्पन्न महापण्डित थे। विस्तीर्ण संसार में पर्यटन कर ज्ञान–कणों को सँजोकर मानव के हितार्थ उन्हें संगृहीत किया।

राहुल जी एक साथ बहुभाषाविद्, भाषाशास्त्री, दर्शनाशास्त्री, इतिहासकार एवं पुरातत्त्व की अनेक शाखाओं के प्रकाण्ड पण्डित, यायावर, राजनीतिज्ञ, बौद्ध दार्शनिक, साम्यवादी तथा हिन्दी भाषा के अनन्य उपासक थे। आजीवन साहित्य सर्जन में लीन रहकर ज्ञान की परिधि का अनवरत् विस्तार किया। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। डॉ. कमला सांकृत्यायन के अनुसार आरम्भ में वे 36 भाषाएँ जानते थे। बाद में काम न पड़ने से वे कितनी ही भाषाएँ भूल गये थे। 16 भाषाओं को वे भली प्रकार पढ़ते, लिखते व समझते थे। उनका कृतित्व गुणात्मक एवं परिमाणात्मक वैविध्य से युक्त है। इस व्यक्ति ने हिन्दी साहित्य के कोष को जितना भरा, जाना आसान कार्य नहीं है। मौलिक ग्रंथों के प्रणयन के साथ–साथ अनेक ग्रंथों को अनूदित भी किया। उपन्यास, कहानी, यात्रा विषयक निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, नाटक प्रभृति सर्जनात्मक, गद्य विधाओं के अतिरिक्त धर्म, दर्शन, इतिहास, राजनीति, समाजशास्त्र विषयक उपयोगी साहित्य विश्व को दिया। राहुल जी के साहित्य का एक विशेषता यह भी है कि इतिहास एवं वर्तमान जीवन के उन अछूते अंगों का संस्पर्श किया है, जिनकी ओर साधारणतया लोगों की दृष्टि नहीं गई थी, जैसे 'वोल्गा से गंगा' नामक कहानी–संग्रह में उन्होंने मानव के विकास को रेखांकित किया है। यह उनके अनथक पुरूषार्थ, दृढ़ मनोबल एवं अध्यवसाय से ही संभव हुआ है। वे तो जीते–जागते कोश थे।

वैसे तो राहुल जी ने साहित्य के हर अंगों पर प्रायः अपन लेखनी चलायी है, यह बात सर्वविदित है पर उनका कथाकार रूप बहुत ही सशक्त है। कहानी हो या उपन्यास, पाठक को बरबस ही आकर्षित कर लेती है। वैसे राहुल जी के कहानी संग्रह केवल चार ही हैं, यथा 'सतमी के बच्चे', 'वोल्गा से गंगा, 'बहुरंगी मधुपुरी' तथा 'कनैला की कथा'। इनमें क्रमशः दस, बीस, इक्कीस तथा नो कहानियाँ हैं। इस प्रकार राहुल जी की कहानियों की संख्या साठ है।

राहुल जी की कानियों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है, पहला, ऐतिहासिक कहानियाँ, दूसरा, सामाजिक कहानियाँ। राहुल जी यथार्थवादी कहानीकार हैं। जब आपने कहानी–लेखन के क्षेत्र में पदार्पण किया था तो प्रेमचन्द्र जी की सामाजिक और प्रसाद जी की ऐतिहासिक कहानियों की परम्परा विद्यमान थी। राहुल जी ने दोनों तरह की कानियों का सृजन किया है।

राहुल जी के कहानी लेखन के युग में देश की सामाजिक जागृति एवं राजनीतिक चेतना के कारण अवस्था ऐसी हो गई थी कि उस समय अपने वास्तविक रूप से अवगत कराने, अपनी अन्तर्निहित शक्तियों का आभास देने वाले जागरण के साहित्य की आवश्यकता हुई। एक ऐसे साहित्य की, जो विचार में स्वतंत्र हो, चिन्तन में संतुलित हो, जीवन की अवरोधक शक्तियों के प्रति उग्र हो, दीन–दरिद्र जनता की हीन दशा से विक्षिप्त हो और सर्वोपरि भारत की मूक जनता के जीवन को ही प्रदर्शित करके उसकी आशाओं और अभिलाषाओं को वाणी देने वाला हो। राहुल जी ने अपनी रचनाओं द्वारा इन्हीं अपेक्षाओं की पूर्ति करने के प्रयास किया, क्योंकि वे समय और देश के साथ चलने वाले कथाकार थे। उन्होंने जीवन की विभिन्न समस्याओं में ग्रामीण समस्या को प्रधान स्थान दिया। ग्रामीण सामाजिक समस्याओं से वे भली भांति अवगत थे। उनकी कहानियों के अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि वे ऐसे स्वास्थ्य समाज के समर्थक थे जो विषमताओं, असंगतियों एवं विकृतियों आदि से परे हो, जहां भेदभाव की भावना से मानवता अभिशप्त न हो। छूआछूत, जाति एवं वर्ग का भेदभाव शहरों की अपेक्षा देहात या गांवों में अधिक पाया जाता है क्योंकि वहां की अल्पशिक्षित जनता इन रूढ़ियों को प्राथमिकता देती है। 'बहुरंगी मधुपुरी' में यह भावना मुखरित हुई है। ग्रामीण किसी भी कीमत पर अपने धर्म परित्याग करना पसन्त नहीं करता। इसका करण उनका अधिक शिक्षित न होना है। जो व्यक्ति जितना ही अधि पढ़–लिख जाता है, उच्च पद प्राप्त कर लेता है, वह उतनी ही अधिक मात्रा में भ्रष्ट हो जाता है। वह ईश्वर एवं धर्म की दुहाई नहीं देता। यह सब उसे तब याद आता है, जब वह पद या धन से रिक्त हो जाता है। अधिकांश गाँवों में शिक्षा के उच्च साधन न हो पाने के कारण ये गरीब अपनी प्रतिभा का निखार नहीं कर पाते। बिरले लोगों को छोड़कर अधिकांश ग्रामीण चार–छह दर्जे तक पढ़ लेते थे। आज–जैसी शिक्षा का प्रचार–प्रसार राहुल जी के युग में नहीं हो पाया था। अतः लोगों में इतना भ्रष्टाचार एवं चालाकी व्याप्त नहीं थी। धर्म और ईश्वर की दुहाई ग्रामीण अधिक देते हैं क्योंकि वहाँ की अधिकांश जनता होटलों एवं बारों से दूर रहती है। निर्धनता के कारण मटन एवं शराब का सेवन कभी–कभी स्वप्न में ही हो पाता है। ऐसी स्थिति का चित्रण राहुल जी की कहानियों में देखने को मिलता है। गांव का ब्राह्मण यदि किसी कुजात के यहां का पानी पी ले तो समझो कि बबण्डर मच गया और यदि भूले–भटके उसे कोई मांस खाते देख ले, तो समझों, गई उसकी जजमानी। गांवों, देहातों में खूब ध्यान रखा जाता है। 'गुरू जी' नामक कहानी में राहुल जी ने ऐसी ही भावना को अभिव्यक्त किया है – 'गुरू जी इसी मिथिला के एक रत्न थे। उनकी शिक्षा–दीक्षा परम्परा के अनुसार हुई थी। वह अक्षर परिचय के लिए किसी प्राइमरी स्कूल में नहीं गये, बल्कि

पुरानी परिपाटी से उन्होनें अपने गांव में ही एक संस्कृत पंडित से वर्णमाला सीखी। यदि दो तीन साल किसी प्राइमरी पाठशाला में लगाये होते, तो कम–से–कम जिले का भूगोल तो उन्हें पढ़ना और नक्शा देखना पड़ा होता। उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया। मिथिला का कोई विद्वान् किसी मलेच्छ देश में जाना पसन्द नहीं करता, परन्तु पेट उसे मजबूर करके ले जाता है। जिस देश में वैदिक काल से चले आते मत्स्य–मांस के अपवित्र आहार को पवित्र समझा जाय, वहां जाने के लिए भला कोई धर्मप्राण मैथिल पण्डित कैसे तैयार हो सकता है, जबकि वह जानता है कि वहां सालों घासाहार पर गुजर करने के बाद भी गांव में आने पर प्रयश्चित करना पड़ेगा। ग्रामीण चित्रण में राहुल जी ने उसकी सामालिक एक आर्थिक स्थिति का भी चित्रांकन किया है।

गाँवों में आज भी यह परम्परा प्रचलित है कि निश्चित तिथियों में वहाँ मेले का आयोजन किया जाता है। शहर के व्यक्तियों के लिए यह तुच्छ एवं हीन मालूम पड़ता है कि वह मेला घूमने जाय पर गांव के खेतिहर मजदूरों के लिए यह मेला साल भर की आवश्यक खरीदी करवा देता है। शहरों में जगह–जगह लोहे, कपड़े एवं बिसातखाने की दुकाने हैं पर गांव में यह सब कहां सम्भव है। सौ–पचास घर के पुरवा में बमुश्किल एक–दो किराने की दुकानें मिलेंगी जहाँ नमक, तेल, गुड़, घी, धनिया, जीरा आदि सामान मिल पाता है। कपड़े की छोटी–मोटी दुकानें ही संभव होती हैं। लोहे का कार्य करने वाला लुहार, बिसातखाने की दुकान ये सब एक गांव में नहीं मिल पातीं। तब ये सब व्यापारी एक गांव से दूसरे गांव में व्यापार करने जाते हैं और व्यापार करने के बाद फिर दूसरी जगह लगने वाले मेले की तैयारी करते हैं। राहुल जी ने बिसुन नामक कहानी में मेले का वर्णन ग्रामीण परिवेश के तहत किया है। मेले में अक्सर ले जाने वाला ग्रामीण सिर पर ढोकर ले जाता है। कहां मिलें उन्हें ट्रक एवं टैक्सी। मेले के वर्णन का चिरण राहुल जी ने जो खींचा है। वह इस प्रकार है – 'शरीर से मेहनत करने के वह आदी थे। बिसुन ही नहीं, उसकी प्रेमिका भी मन भर का बोझ पीठ पर लादे तान छेड़ चल सकती थी। गदहा, भेड़, बकरियों को कैसे लादा और रखा जाता है, इसे भी वह अच्छी तरह जानती थी। 27–28 वर्ष पहले की बात है। उस समय गरव्यांग के व्यापारी और खम्बा भी मानसरोवर से बहुत परिमाण में ऊन, सोहागा, चँवर और दूसरी चीजें नीचे बेचने के लिए ले जाते थे। बिसुन औश्र उसकी बीबी को मजूरी मिलने में कोई दिक्कत नहीं हुई। दीवाली के आसपास अल्मोड़ा में लगने वाले एक बड़े मेले में गये। अपने मालिक की भेड़–बकरियों के बोझों की देखभाल करते उन्होनें अपनी पीठ पर भी 24–30 सेर का बोझा ले रखा था, जिसमें उनकी अपनी बिक्री की चीजें थीं। 'बीसवीं सदी में भारतीयों के जीवन में पर्याप्त अन्तर और समाज खान–पान एवं रहन–सहन में पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगा दिखायी देता है।

गांवों की स्त्रियों को वह सुख – सुविधाएं नहीं मिल पातीं जो शहर में उपलब्ध हैं। गरीब किसान या मजदूर अपना पेट पालें या औरतों के बनाव श्रृंगार का ध्यान रखें। राहुल जी को गांव की सभ्यता एवं संस्कृति का काफी अनुभव था। ग्रामीण नारियों को अक्सर घर–गृहस्थी के अलावा खेती–किसानी का भी कार्य करना पड़ता है। 'कमलसिंह' शीर्षक कहानी में राहुल जी ने लिखा है कि ग्रामीण स्त्रियां घर के कार्य की जवाबदारी के साथ खेती किसानों का भी बहुत–कुछ कार्य कर लेती हैं। कमलसिंह की पत्नी भी शादी के बाद तक अपने माँ–बाप के साथ पशुओं को चराने जाया करती थी या जंगलों में अन्य कार्य से भी उसे जाना पड़ता था। राहुल जी ने लिखा है – 'उसने माँ–बाप के घर रहते ब्याह होने के बहुत बाद तक जंगल में जाकर अपने पशुओं को चराया था, दूसरी तरुणियों के साथ मिलकर मुक्त गीत गाये थे। पहाड़ और जंगल उसे अपने शरीर जैसे परिचित और प्रिय मालूम होते थे।

राहुल जी पर्वतीय यात्राओं के प्रेमी थे। पर्वत की भूमि और वृक्ष उन्हें अत्यधिक आनन्द प्रदान करते थे। इनके प्रकृत चित्र ऋतुओं, पर्वतीय स्थानों, उपवनों, वनस्थलियों एवं नदियों से सम्बन्धित हैं। ऋतुओं में ग्रीष्म, वर्षा और बसन्त के चित्र अधिक हैं। 'वोल्गा से गंगा' की आरम्भिक कहानियां किसी न किसी प्रकृति–चित्र से आरम्भ होती हैं। 'बहुरंगी मधुपुरी' की अधिकांश कहानियों का वातारण पर्वतीय ही है। पाच चाहे गरीब हों या अमीर, अफसर हों या भृत्य, उनके निवास का दृश्य बहुत–कुछ सीमा तक पर्वतीय है। मकानों की सघनता भी कथाकार ने कम दिखायी है क्योंकि वह स्थान पहाड़ी है। प्रकृति–चित्रण में राहुल जी का ध्यान इतिवृत्तात्मक अधिक रहा है। उल्लेखनीय है, राहुल जी की कहानियों में प्रकृति–चित्रण केवल कहानी के वातावरण–निर्माण अथवा कहानी की पृष्ठभूमि निर्मित करने में अधिक प्रयुक्त हुए। देवदारू वृक्ष का वर्णन देखिए 'वृक्ष की घर्घर करती धारा बीच में बह रही थी। उसके दाहिने तट पर पहाड़ धारा से ही शुरू हो जाते थे, किन्तु बायीं तरफ अधिक ढालू होने से उपत्यका चौड़ी मालूम होती थी। दूर से देखने पर सिवाय धनरहित उत्तुंग देचदारू वृक्षों के स्याही के कुछ नहीं दिखलायी पड़ता था और नजदीक आने पर नीचे ज्यादा लम्बी और ऊपर छोटी होती जाती शाखाओं के साथ उनके बाण जैसे नुकीले श्रृंग दिखलायी पड़ते थे और उनमें नीचे तरह–तरह की वनस्पति और दूसरे वृक्ष थे। प्रकृति चित्रण में प्रतीक एवं बिम्बों का भी प्रयोग किया गया है।

राहुल जी ने प्रकृति–वर्णन में शुद्ध और अलंकृत चित्र अंकित किये हैं। बसन्त ऋतु के चित्र बखूबी इन्होनें उभारे वातावरण की सृष्टि के लिए प्रकृति–चिरण आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य प्रतीत होते हैं। 'वोल्गा से गंगा' में वसन्त ऋतु का दृश्य उल्लेखनीय है – 'वसन्त के दिन थे। चिरमृत प्रकृति में नवजीवन का संचार हो रहा था। छह महीने से सूखे भूर्ज वृक्षों पर ठूसे पत्ते निकल रहे थे। बर्फ पिघली, धरती हरियाली से ढँकती जा रही थी। हवा में वनस्पति और नयी मिट्टी की भीनी–भीनी गन्ध फैल रही थी। जीवनहीन दिगन्त सजीव हो रहा था। कहीं वृक्षों पर पक्षी नाना भांति के मधुर शब्द सुना रहे थे, कहीं झिल्ली अनवरत शोर मचा रही थी, कहीं हिमद्रवित प्रवाहों के किनारे बैठे हजारों जल–पक्षी कृति भक्षण में लगे हुए थे, कहीं कलहंस प्रणय–क्रीड़ा कर रहे थे।' वसन्त के यौवन का वर्णन 'बन्धुल मल्ल' तथा 'प्रभा' नामक कहानियों में भी चिरसौन्दर्य के साथ देखा जा सकता है।

राहुल जी की कहानियों में जिस समाज का चित्रण है, वह गरीबी एवं भुखमरी से त्रस्त है, परन्तु वे नव–जीवन के आकांक्षी हैं। शोषण की एक सीमा लाँघने के बाद उनमें अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को पाने की ललक हैं। वह इसके लिए संघर्ष करना चाहते हैं। उनमें एक ऐसी तड़प है तो उन्हें इस बात पर विवश कर देती है कि पुरानी रूढ़िवादिता आधुनिकजीवन के लिए अभिशाप है। स्त्रियां पर्दा–प्रथा दूर करना चाहती हैं। पुरुषों के समान सामाजिक कार्यों में दक्ष होना चाहती हैं। धनी परिवारों के वर्णन में राहुल जी ने प्रायः उन्हें विलास–प्रिय बताया है। 'युगानुकूल आहार–व्यवहार, वेश–भूषा, रहन–सहन के अंकन द्वारा राहुल जी की कििनियों में सामाजिक परिवेश का यथार्थ एवं सजीवन चित्रण मिलता है। पर्वतीय गुफाओं में रहने वाले आर्यों से लेकर बीसवीं शती के अंग्रेजी सभ्यता में रंगे हुए भारतीय समाज के गतिशील चित्र उनकी कहानियों की विशिष्टता है। 'बहुरंगी मधुपुरी' के अनेक पात्र ऐसे हैं जिन्हें विलासिता प्रिय है। मेम साहब अपने बनाव–श्रृंगार में सैकड़ों रुपये खर्च करती हैं। होटलों में अनाप–शनाप खर्च करती हैं। धूम्रपान में भी ये स्त्रियाँ निपुण दिखायी देती हैं, लेकिन कई कहानियाँ ऐसी हैं, जिनकी नायिकाएँ गरीब घराने से सम्बन्धित तो हैं ही, साथ–ही–साथ ग्रामीण भी हैं। उनके पति अंग्रेजी अफसरों के बँगलों में छोटी तनख्वाह में कार्य करते हैं और इनकी

पलियाँ बँगलों में पड़ी व्यर्थ की जमीन में साग–सब्जी उगाती हैं। गाय–भैंस पालती हैं। पशु–पालन करके दूध–घी का व्यापार करती हैं। उससे होने वाली आय से उनके परिवार का भरण–पोषण होता है। इतने पर भी इन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। ऐसे चित्र राहुल जी की कहानियों में राशि स्थलों में देखे जा सकते हैं।

सामाजिक कहानियों में राहुल जी की निजी जीवन–दृष्टि है। मानवीय संवेदनाओं तथा जीवन की यथार्थ परिस्थितियों को ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त कर देना उनका लक्ष्य रहा है। मानव और मानवता की गतिशीलता का सदैव उन्होंने ध्यान रखा है। डॉ. खेलचन्द आनन्द ने लिखा है, 'राहुल जी ने अपनी कहानियों में मानव–जीवन की व्याख्या के लिए धर्म, साम्यवाद, पूँजीवाद, गणतंत्र, प्रजातंत्र आदि पर विचार किये हैं। राहुल जी रूढ़िग्रस्त धर्म को समाज के लिए घातक एवं अहितकारी मानते हैं। धर्म का साम्प्रदायिक रूप समाज के लिए क्षयरोग के समान है, इसी ने मानव–मानव में भेद की दीवारें खड़ी की हैं। इस धर्म ने मन्दिर, मस्जिद तथा गिरजाघरों के निर्माण में तो स्पर्धा दिखलायी है, परन्तु मानवता के निर्माण में नहीं। राहुल जी ने 'ठाकुर जी', 'पेड़ बाबा', 'महाप्रभु' आदि कहानियों में शिक्षित एवं अशिक्षित भारतीयों की अन्य श्रद्धा पर व्यंग्य किया है। वे ब्राह्मणों, पुरोहितों एवं ढोंगी महात्माओं को शोषक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।'

राहुल जी ने सामाजिक कहानियों के साथ–ही–साथ ऐतिहासिक कहानियों में भी दक्षता हासिल की है। 'वोल्गा से गंगा' तथा'कनैला की कथा' में राहुल जी की ऐतिहासिक कहानियाँ संगृहीत हैं, जिनमें इतिहास–तत्त्व की प्रधानता है। 'वोल्गा से गंगा' तथा 'कनैला की कथा' में जिस ऐतिहासिक सामग्री का उल्लेख किया गया है, उसकी ओर राहुल जी ने स्वयं ही इंगित किया है। उन्होंने 'वोल्गा से गंगा' की भूमिका में लिखा है – 'लेखक की एक–एक कहानी के पीछे उस युग के सम्बन्ध की वह भारी सामग्री है, जो दुनिया की कितनी भाषाओं, तुलनात्मक भाषाविज्ञान, मिट्टी, पत्थर, ताँबे, पीतल, लोहे पर सांकेतिक व लिखित साहित्य अथवा अलिखित गीतों, कहानियों, रीति–रिवाजों, टोटके–टोनों में पायी जाती है।' 'वोल्गा से गंगा' में लेखक ने तो मानव की आदिम व्यवस्था का 'उल्लेख किया है, जब मानवता इतनी सभ्य एवं सुसंस्कृत नहीं थी।

कहानियों के समानांतर ही राहुल जी के उपन्यास हिन्दी–जगत् के लि एक महती उपलब्धि हैं। जिस तरह इनकी कहानियों का वर्गीकरण सामाजिक एवं ऐतिहासिक दो भागों में किया गया है उसी तरह उनके उपन्याय भी मुख्य रूप से सामाजिक और ऐतिहासिक परिदृश्य में समाहित है। 'बाईसवीं सदी' राहुल जी की प्रथम औपन्यासिक कृति है। इसके गहन अध्ययन के उपरान्त मेरी ऐसी मान्यता है कि उपन्यास के तत्त्वों का सम्यक् समावेश इनमें नहीं है। भाषा की दृष्टि से यह परिपक्व कृति है। विद्वानों ने इसे कपोलकल्पनात्मक उपन्यास कहा है। राहुल जी की दृष्टि अपने विचारों का आलोड़न–विलोडन करने के पश्चात् मार्क्सवाद पर जाकर स्थिर हुई थी। मार्क्सवादी विचारधारा उनके कथा–साहित्य में नई शक्ति एवं गति देने वाला दर्शन बनकर उभरा। 'बाईसवीं सदी' का महत्त्व इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय है कि इसे हिन्दी का प्रथम कपोलकल्पनात्मक उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है। 'बाईसवी सदी' में लेखक ने वर्गहीन समाज की कल्पना की है, जिसमें पूँजीपति एवं मजदूर के मध्य ऊँच–नीच की खाई नहीं है। सभी सुखी एवं समरस हैं। जाति, धर्म एवं भाषा के भेद्भाव की प्राचीन लकीरों को लाँघा गया है। लेखक ने पूरी वसुधा को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत–प्रोत समाज की कल्पना इस उपन्यास में किया है, जैसे–'अब भूमण्डल में सभी जगह समता का राज्य है। धर्म के नाम पर धन और प्रभुता के नाम पर, गोरे और काले के नाम पर

जैसे अत्याचार पहले होते थे, जिस तरह मानव–सन्तानें दूसरों के पैरों के नीचे आजन्म कुचली जाती थीं, उन सब का अब नाम नहीं। अब मनुष्य–मनुष्य बराबर हैं। सभी जगह श्रम और भोग का समत्व मूलमंत्र रखा गया है। न अब भूमण्डल में जमींदार हैं न प्रजा, न धनी, न निर्धन, न ऊँच हैं न नीच। सारे भूमण्डल के निवासियों का एक कुटुम्ब है। पृथ्वी की सभी स्थावर–जंगम सम्पत्ति उसी कुटुम्ब की सम्पत्ति है।' इससे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि इन उपन्यास में राहुल जी ने विश्व को अखण्डित मानवता के रूप में देखने का प्रयत्न किया है जो स्तुत्य है।

'जीने के लिए' राहुल जी का दूसरा उपन्यास है। इसमें प्रथम विश्व–युद्ध के बाद भारतीयों द्वारा स्वतंत्रता–प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों का लेखा–जोखा है। अंग्रेजी की दमन'नीति चाहे वह कृषकों के प्रति हो या व्यापारियों के प्रति, का इसमें समावेश है। मार्क्सवादी दर्शन को भी राहुल जी ने इस उपन्यास में उभरा है। समग्र रूप से इमें सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक समस्याओं को मुखरित करने का ध्येय लेखक का रहा है और उसे सफलता भी मिली है। यह सामाजिक उपन्यास है।

'भागो नहीं, दुनिया को बदलो' राजनपीतिक उद्देश्य को लेकर लिखी गई कृति है। राहुल जी का दिल–दिमाग मार्क्सवाद पर पूरी तरह घुस गया था और उन्होंने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। कहानियों में भी मार्क्सवादी स्वर मुखरित हुए हैं। इस उपन्यास में पूरी तरह से मार्क्सवादी सिद्धान्त छाये हुए हैं। राजनीति के क्षेत्र में किस तरह के छल–प्रपंचों का सहारा लिया जाता है, उसको संवादात्मक शैली में अभिव्यक्त किया गया है।

'राजस्थानी रनिवास' भी सामाजिक उपन्यास है। गौरी नायिका के माध्यम से राजस्थानी रनिवासों में वान्दिनी नारी की दयनीय दशा का चिरण उपन्यास में है। सामन्ती जीवन की ओछी स्वाभाविक प्रवृत्ति का अंकन इस उपन्यास की मुख्य विशेषता है।

राजनीति उपन्यासों में 'दिवोदास', सिंह सेनापति', जय यौधेय', 'मधुर स्वप्न', 'विस्मृत यात्री' की गणना की जाती है। इन उपन्यासों में इतिहास एवं कल्पना का सुन्दर समन्वय हुआ है। सर्जनात्मक साहित्य के क्षेत्र में राहुल जी की प्रतिभा सर्वाधिक वरदान उनके ऐतिहासिक उपन्यासों को प्राप्त है। इतिहास का विस्तृत एवं गंभीर ज्ञान राहुल जी के व्यक्तित्व की एक उत्कृष्ट देन है। उन्होंने जिस युग का चित्रांकन अपने उपन्यासों में किया है, उसे यथास्थिति मे लाकर खड़ा कर देना उनकी कलम और ज्ञान का ही परिचायक है। राहुल जी में ऐसी प्रतिभा थी कि इतिहास के साथ–साथ ऐतिहासिक कल्पना का भी आश्रय लिया है और उसमें अस्वाभाविकता भी कहीं नहीं आयी है। प्रसिद्ध आलोचक शिवदान सिंह चौहान ने लिखा है – 'इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास–तत्त्व एवं कल्पना–कुशलता द्रष्टव्य है, जिनमें 'सिंह सेनापति', 'जय यौधेय', 'मधुर स्वप्न', उल्लेखनीय हैं – उनके उद्देश्य विभिन्न प्राचीन संस्कृतियों और सामाजिक युग में मनुष्य के विकास की कहानी को चित्रित करना होता है। इसके लिए वे ऐतिहासिक और प्रागैतिहासिक युगों के विशिष्ट समाजों औश्र उनके निर्माण में भाग लेने वाले विशिष्ट और साधारण जनों का कल्पनाजन्य चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनके उपन्यासों में प्राचीन मानव–संस्कृति औश्र समाज के ऐतिहासि विकास की सुन्दर झाँकी रहती है।' उल्लेखनीय है, राहुल जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रचीन शिलालेख, प्राचीन सिक्के, स्मारक, परवाने, ताम्रपत्र, भोजपत्र, प्राचीन लिपि आदि ऐतिहासिक साक्ष्यों का सहारा लिया है।

'दिवोदास' ऋग्वैदिक आयों के जीवन से सम्बन्धिरत लघु उपन्यास है। इस उपन्यास में

शम्बु–विजय और शम्बर–विजय से सम्बद्ध घटनाएं हैं। उपन्यास का कथानक बारह खण्डों में विभाजित है, प्रत्येक खण्ड के प्रारम्भ में ऋग्वेद की एक–एक ऋचाा को उद्धत किया गया है। इस तरह बारह ऋचाएँ भी इस उपन्यास में संगृहीत हैं। ऋग्वेदकालीन संस्कृति का राहुल जी ने इस उपन्यास में समावेश किया है।

आयों का प्रधान उद्योग कृषि–कर्म था। आर्य और अनार्य जन का भेद भी राहुल जी ने इसमें मुखरित किया है। ऋग्वेदकालीन समाज में गायों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। पशु–पालन तथा घरेलू जानवरों का पालन कृषि–कर्म से किसी भी मायने में कम उपयोगी नहीं थी। 'दिवोदास' में वर्णित आर्यों के आमोद–प्रमोद को इतिहासवेत्ताओं ने स्वीकार किया है, जिसमें घोड़ों की दौड़, रथ की दौड़, नृत्य एवं गायन सम्मिलित हैं। 'दिवोदास' में कल्पना का प्रयोग स्वल्प ही है। इस उपन्यास में सप्तसिन्धु के आर्यों के जन–जीवन को प्रस्तुत करना उनका ध्येय रहा है और इस ध्येय में उन्हें सफलता भी मिली है। ऐतिहासिक तथ्यों को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया गया है।

'सिंह सेनाति' राहुल जी का दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका कथानक 500 ई0 पू0 के लिच्छवि–गणराज्य से सम्बद्ध है। इसे राहुल जी ने कहानियों के रूप में लिपिबद्ध किया है। शायद राहुल जी का ख्याल उपन्यास में परिवर्तित करने का नहीं था, परन्तु प्रसंगिकता ऐसी बनी कि इसे उपन्यास कहना पड़ा, जैसा कि राहुल जी का कथन है – 'यह मेरा दूसरा उपन्यास है – ई0पू0 500 का। मैं मावन–समाज की उषा से लेकर आज तक के विकास को 20 कहानियों में लिखना चाहता था। उन कहानियों में एक समय (बुद्धकाल) का भी था। जब लिखने क समय आया जो मालूम हुआ कि सारी बातों को कहानी में नहीं लाया जा सकता, इसलिए 'सिंह सेनापति' उपन्यास के रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है।'

'सिंह सेनापति' में लिच्छविगण के सामाजिक व राजनीति जीवन को प्रस्तुत करना लेखक का उद्देश्य रहा है। उपन्यास के अध्ययनोपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी गणतंत्रों में लिच्छवि–गणतंत्र थी। उसकी राजधानी वैशाली में थी। उपन्यास में वर्णित कोशल नरेश प्रसेनजित् भी ऐतिहासिक व्यक्ति है। इसके अतिरिक्त बिम्बसार, अजातशत्रु भी ऐतिहासक पात्र हैं। घटनाएँ भी ऐतिहासिक मोड़ मिये हुए हैं। बिम्बसार और लिच्छवियों के मध्य युद्ध का जो वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित है, लेखक ने अनुमान से काम लिया है। पुरुष पात्रों में कुछ को छोड़कर सभी स्त्री एवं पुरुष पात्र काल्पनिक हैं। खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा, आचार–विचार सम्बन्धी वर्णन में भी कल्पना का प्रचुर प्रयोग किया गया है।

'जय यौधेय' राहुल जी का तीसरा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें गुप्त सम्राटों के समकालीन यौधेय जाति के जन–जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णिन है। इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यास कहे जाने के बारे में राहुल जी ने लिखा है – 'जय यौधेय ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें सन् 350–400 के भारत राजनीतिक, सामाजिक अवस्था का चित्रण किया गया है।' प्राक्कथन में लेखक ने गुप्तकालीन शिलालेखों, सिक्कों आदि का उल्लेख किया है। इस उपन्यास के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। आचार्य असंग एवं आचार्य वसुबन्धु, जो इस उपन्यास में जय के शिक्षक रूप में आये हैं, बौद्धधर्म और दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् है। 'जय यौधेय' का नायक कल्पित है। फाह्यान के यात्रा–विवरण तथा कालिदास के ग्रन्थों को ऐतिहासिक धरोहर के रूप में भी उल्लिखित किया गया है। इस उपन्यास का नायक पूरे देश का भ्रमण करता है। ऐसी स्थापना है कि 'जय

यौधेय' गुप्तकालीन संस्कृति का यथार्थ लेखा–जोखा है। इसमें गुप्तकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक मान्यताओं का जीता–जागता चित्रण है। ऐतिहासिक प्रमाण के लिए चीनी यात्री फाह्यान के वक्तव्यों, शिलालेखों एवं सिक्कों का आश्रय ग्रहण किया गया है। उपन्यास में घटनाओं को इतिहाससम्मत बनाने की पूरी चेष्टा की गई है। बौद्धधर्म की प्रासंगिकता पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है। 'मधुर–स्वप्न' की गणना भी ऐतिहासिक उपन्यासों में की जाती है। इसमें ईरान के सम्राट शाह कवात की जीवन–घटनाओं को अंकित किया गया है। मज्दक मत का अनुयायी होने के कारण उसे पदच्युत होना पड़ता है, परन्तु हूण सम्राट् तोरमान की सहायता से वह पुनः सिंहासनारूढ़ होता है। उपन्यास से यह निष्कर्ष निकलता है कि वामदात पुत्र मज्दक, ईरन में पांचवी शती के अन्त में साम्यवादी वर्ग का नेता हुआ था। वह सामाजिक वैषम्य का विरोधी था। मज्दकी आन्दोलन एक ऐसे धर्म का अनुयायी था जिसके अपने ही सिद्धान्त थे, जो मुख्यतः मानी की शिक्षाओं से लिये गये थे। मज्दक के सिद्धान्त सामन्तवादी विचारधारा के परिचायक थे। कवात सन् 487 ई0 में ईरान का शासक बना था। कई वर्षों के युद्ध एवं अकाल के कारण उसका शासन सुदृढ़ नहीं था। शाह कवात की मृत्यु 531 ई0 में हुई थी। 'मधुर स्वप्न' का नायक कावत था तो षडयन्त्र से सिंहासन से उतार दिया जाता है। मृत्युदण्ड की सजा नहीं दी जाती थी, परन्तु उसे जेल में डाल दिया जाता है। पत्नी की सहायता से उसे कारावास से निकलने में सफलता मिलती है। जामास्प कवात का भाई था। हूणों की मदद से वह जामास्प को गद्दी से हटाकर पुनः सिंहासनरूढ़ होता है।

'विस्मृत यात्री' भी राहुल जी का ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें बौद्ध यात्रर नरेन्द्रयश का जीवन चरित्र निषपित किया गया है। नरेन्द्रयश छठी शती का एक बौद्ध यात्री है। यह बौद्धधर्म का प्रचार करता है। ध्यान रहे, नरेन्द्र देव कोई कल्पित पात्र नहीं है, अपितु विखण्डित भारत का ही सपूत था। बौद्धधर्म के प्रचार–प्रसार के लिए वह भारत से श्रीलंका की यात्रा करता है। तदन्तर वह चीन जाता है। वहां बौद्धधर्म का प्रचार–प्रसार करने के बाद चीन में उपलब्ध बौद्धधर्म के ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद करता है। श्रीलंका, चीन, मध्य एशिया में विचरण करने के बाद अन्त में आधुनिक सियान महानगरी में अपना शरीर छोड़ता है।

राहुल जी के सामाजिक एवं राजनीति उपन्यासों के अनुशीलन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि राहुल जी की कल्पनाशक्ति की थी। कथा–विकास अपेक्षाकृत सरल ढंग से हुआ है। भारतीय संस्कृति का राहुल जी ने बड़ा ही ध्यान रखा है और उसे ईशिता भी प्रदान की है। छोटों का कर्तव्य होता है कि वे अपने से बड़े व्यक्ति का आदर सम्मान करें। सभ्यता यही सिखाती है कि फैशन में आकर हम अपनी संस्कृति की धरोहर को भूल न जायँ। 'जीने के लिए' उपन्यास में आदर भाव का एक उदाहरण देखिए – 'चाचा, पालागी, चाची, पागली'–सुचित सिह ने लौटूसिंह औश्र उनकी स्त्री का पैर छूकर कहा।

'खुश रहो, बच्चा सुचित, कहो, कुशल आनन्द से तो रहे'–लौटूसिंह ने स्नेह–भरी दृष्टि से देखते हुए अपने भतीजे को आशीर्वाद दिया।

भारत की अधिकांश जनता गाँवों (देहातों) में निवास करती है। उनका मुख्य पेश कृषि है। कृषि आज की अपेक्षा राहुल जी के समय में उतनी अधिक और अच्छी पैदावार नहीं दे पाती थी क्योंकि वह भगवान भरोसे थी। पानी समय से बरस गया तो फसल सही ढंग से हो गई, नहीं तो सब सूखकर स्वाहा हो गई। कभी–कभी तो यह स्थिति होती थी कि फसल से बीज भी वापस नहीं आता था, परन्तु अब देश ने बहुमुखी उन्नति की है। बड़ी–बड़ी नहरें निकाली हैं। हर खेत में

सिंचाई की व्यवस्था हो रही है। कुएँ, ट्यूबवेल आदि सिंचाई–साधरों की व्यवस्था की जा रही है। तब भारत में यदिप अकाल पड़े तो बमुश्किल उदर–पूर्ति के लिए अन्न मिल पाता था। राहुल जी ने ऐसे चित्रण अंकित किये हैं–'सदियों से हम अकाल और महामारी से मरने के आदी हो गये हैं।'

राहुल जी ने सामाजिक उपन्यासों में ग्रामीण परिस्थितियों का उल्लेख ज्यादा किया है, उनमें भी खास करके उनके आर्थिक पक्ष का। लौटूसिंह के घर का एक चित्रण देखने के बाद उसके आर्थिक पक्ष का उल्लेख करना ज्यादा अच्छा होगा–'लौटूसिंह का घर गांव के छोर पर था। दो कोठरियाँ, सामने फूस का ओसारा और बाहर खुला आँगन। ओसारे की एक तरफ बकरियाँ बाँधी जाती थीं। गर्मियों में लोग बाहर सोते थे, बरसात में ओसारे में, जाड़ों में घर के भीतर। एक कोठरी में सामान रखा रहता था और दूसरी में चूल्हा, जाड़ों में सोने का भी इन्तजाम उसी में रहता।'

गाँव–देहात के घर–द्वार का सजीव चित्रण ही बनता है, साथ–ही–साथ निर्धनता का आँकड़ा की द्रष्टव्य है। गाँवों में निर्धनता का ही साम्राज्य है। विरले घरों को छोड़कर गाँववासी अभावों से जूझते रहते हैं। लेखकर ने अपने उपन्यासों में भरपूर ईमानदारी के साथ इन्हें उभारी है। लौटूसिंह की पत्नी राधा बीमार है। क्वार का महीना है। धन के अभाव में वे उसे जरंसा समझकर टाल देते हैं, परन्तु जब राधा बिस्तर ही पकड़ लेती है तब उसे अस्पताल में ले जाने की चिन्ता सताती है, परन्तु उसके लिए यह सब कहाँ मयस्सर। ऐसा ही एक दृश्य देखने योग्य है – 'वैद्य ने बताया कि पाण्डु रोग है और लौटूसिंह ने अपनी सारी शक्ति राधा की चिकित्सा में लगायी। दस–बारह मील के भीतर कोई अस्पताल न था और दूर के सरकारी अस्पताल में राधा की भर्ती हो जाती, इसमें भी संदेह था, क्योंकि लौटूसिंह को किसी प्रभावशाली पुरूष की न सिफारिश मिलती और न उसके पास उतना रुपये का ही बल था, लेकिन दो–चार कोस के भीतर जितने भी वैद्य–हकीम थे, सबके दरवाजों की खाक छान डाली। सिलाई और बकरी से राधा ने जितने रुपये जमा किये थे, सब खर्च हो गये। बकरियां भी बि गई।

अपन्यास में घटना एवं वस्तुस्थिति की अपेक्षा चरित्र चित्रण को अधिक महत्व प्राप्त है क्योंकि उपन्यास मानव–जीवन का चित्र है। चरित्र–चित्रण की प्रभावान्विति काफी हद तक लेखक के व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। लेखक की मानसिकता क्या है, उसे कैसे पात्र प्रिय हैं, कथा में वह पात्रों का प्रयोग करना चाहता है, इस पर भी पात्रों के चरित्र–चित्रण एवं चयन की स्थिति बनती है। राहुल जी के उपन्यासों के आधार पर दो तरह के पात्रों की गणना की जा सकती है। प्रथम, सामाजिक घटना क्रम को जन्म देते हैं, दूसरे, ऐतिहासिक पात्र, जो इतिहास से या तो उधार लिये गये हैं या इतिहास से हू–बहू ले लिये गये हैं। दिवोदास, कालिदास, बिम्बसार, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त एवं समुद्रगुप्त ऐसे ही पात्र हैं, जिन्हें इतिहास से हू–बहू ले लिया गया है। ऐतिहासिक उपन्यासों के कुछ पात्र काल्पनिक भी हैं। मेरी दृष्टि में ऐसे पात्रों को अस्थिर पात्र कहना उचित होगा।

सामाजिक पात्रों का चयन जी ने ग्रामीण परिवेश से अधिक चुना है। निम्न और मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्व भी इन्हीं पात्रों से लेखक ने कराया है। समाज में व्याप्त कुरीतियों पर लेखक ने 'जीने के लिए' उपन्यास के ग्रामीण पात्र मोहनलाल के माध्यम से प्रहार किया है। उनका दृष्टिकोण है – 'जाति–भेद ने सामाजिक विद्रोह की आग भड़कायी। किसी ने खुशी से अपने को नीच जाति मान, स्वीकार नहीं किया और इसके परिणामस्वरूप हमने देखा कि जब–जब देश की स्वतंता का सवाल आया तो देश–रक्षा का भार

कुछ इने–गिने वंशों पर पड़ा। इसी कमजोरी के कारण शकों से हम परास्त हुए। तुर्कों ने हमें जीता। मुगलों का शासन हमें स्वीकार करना पड़ा और आज हम अंग्रेजों के गुलाम हैं। 'देश की एकता और अखण्डता कैसे संभव हो सकती है। देश की स्वतंत्रता के लिए एकता जरूरी है। धर्म और मजहब को भूलकर सभी जाति एवं वर्गों के लोगों को इसमें सहयोग देना चाहिए। राहुल जी ने अपने पात्रों के माध्यम से खुद के अन्तकरण की बात को कहा है। देश की एकता के सम्बन्ध में उनके उपन्यास 'जीने लिए' का पात्र मोहनलाल कह रहा है – 'राष्ट्र की एकता मंचों पर लम्बे–लम्बे भाषण से नहीं होगी। इसके लिए हमें ठोस काम करना होगा। वह ठोस काम यही है कि देश के भीतर धर्म और जाति–भेद दीवारें खड़ी की है, उन्हें गिरा देना। हाँ, हिन्दू, मुसलमान, इसाई या लामजहब होने से हमारे खान–पान, शादी ब्याह में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। जरूरत पड़ने पर इसके लिए हमें मजहब से भी लोहा लेने के लिए तैयार।' राहुल जी के कथानक में दम है। वे समाज को संघर्षशील बनाने के साथ–साथ कर्मशीलन भी बनाते हैं।

राहुल जी के उपन्यास की परिणति अथवा पर्यवसिति सुख और दुःख दोनों में होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि इनके उपन्यास सुखन्त और दुःखान्त दोनों तरह के हैं। 'दिवोदास' सुखान्त है जबकि 'जय यौधेय' एवं 'मधुर स्वप्न' दुःखान्त हैं।

'कथाशिल्प की दृष्टि से राहुल जी के उपन्यास शिथिल एवं अपरिपक्व हैं। इनके कथानकों में यह शक्ति नहीं जो पाठक को अभिभूत कर उसे अपने साथ बहा ले चले।' इसके कई कारण हो सकते हैं।

एक अच्छे उपन्यास का लक्षण यह भी माना जाता है कि उसका कथोपकथन संक्षिप्त हो। लम्बे एवं रूखे कथानक पाठक में बोरियत भरते हैं। उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाय, उतना ही अच्छा है। राहुल जी के उपन्यास इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। इनके संवाद में कोरी सजावट नहीं है अपितु कथा को विकास देते हैं। कथोपकथन में सार्थकता, स्वाभाविकता एवं नाटकीयता के गुणों का होना अनिवार्य होता है। इससे उपन्यास में जीवन्तता आती है। संक्षेप में राहुल जी के उपन्यासों के कथोपकथन के सन्दर्भ में इतना ही कहना चाहूँगा कि इनके संवाद लम्बे और छोटे दोनों तरह के हैं, परन्तु लम्बे संवाद होने के बावजूद भी उनमें मिठास एवं उर्वरता बनी रहती है। अस्वाभाविकता या जी उबाऊपना नहीं है।

वातावरण उपन्यास का एक ऐसा तत्त्व है, जिसमें रहकर पात्र अपने व्यक्तित्व को उभारता एवं विकसित करता है। राहुल जी के उपन्यासों में गाँव, खेत एवं खलिहान के चित्र सशक्त रूप में उभरे हैं। खेतिहर समाज का यह दृश्य उल्लेखनीय है – 'क्वार का अँधेरा पक्ष था। वर्षा हफ्ते भर से रुकी थी, लेकिन रामपुर के ताल–पोखरे भरे हुए थे। मक्का कट चुका था और खेतों में बँधे मचान सूने पड़ गये थे। अब की साल रामपुर में फसल अच्छी रही। धान तो और भी अच्छा। लोग कह रहे थे–बारह साल के बाद ऐसा धान आया है। आसमान बिल्कुल साफ था और तारे दुगुनी जोत से चमक रहे थे।' यह बिल्कुल शुद्ध भारतीय वातावरण है। भारतीय वातावरण के अतिरिक्त राहुल जी ने पाश्चात्य वातावरण को भी अपने उपन्यासों में वाणी दी है, जिसमें ईरान मुख्य है।

राहुल जी के कथा–साहित्य के गहन अनुशीलन के पश्चात् यह निष्कार्ष सहज ही निकल आता है कि उनकी दृष्टि अनेक स्थलों पर साम्यवादी रही है। उपन्यास हो या कहानी, धूम–फिरकर वे इसी तह में पहुंचख जाते हैं कि पूँजी का सम–वितरण, सहकारी जीवन, पुरुष और

नारी के समान अधिकार, मुक्त प्रेम होना चाहिए। यह विचार मार्क्सवादी जीवन–दर्शन के करीब प्रतीत होते हैं। इस तरह राहुल जी की दृष्टि मार्क्सवादी विचारधारा पर सतत बनी रही है।

सन्दर्भ

- पाश्चात्य और पौर्वात्य दर्शन के सम्बन्धी राहुल – डॉ. अनुज प्रताप सिंह
- राहुल सांकृत्यायन का साहित्य और उनकी दृष्टि–डॉ. विश्वनाथ प्रसाद
- राहुल सांकृत्यायन औश्र हिमालय में शोध की दिशाएँ–डॉ0 उमादत्त शर्मा 'सतीश'
- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन–डॉ. रामचरण महेन्द्र
- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन–डॉ. अर्जुनदास केसरी
- व्यक्ति राहुल – डॉ. राम आधार सिंह
- महापण्डित राहुल सांकृत्यायनः युवा विकास के संदर्भ में–डॉ. माधव प्रसाद पाण्डेय
- राहुल के ऐतिहासिक उपन्यासः सृजनात्मक दृष्टि–डॉ. माधव प्रसाद पाण्डेय
- पालिबौद्ध–साहित्य के बारह राहुल– डॉ. शिव शंकर त्रिपाठी।
- राहुल सांकृत्यायन की यात्राः साहित्य का जीवन बोध – डॉ0 सुशीलारानी गर्ग
- दिवोदासः ऋम्वैदिक आर्य – संघर्ष का बृहस्पतिवार फलक–डॉ. राम मूर्ति त्रिपाठी
- सम्मेलन पत्रिका

Copyright © 2016, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.